कांग्रेस और गांधीजीका कार्यक्रम

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ४७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २३ जनवरी, १९५४

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

पैदल यात्रा और भूदान

[ता० २०-१२-'५३ को मनहरपट्टी पड़ाव पर किये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

अिन दिनों हवाअी जहाज चलते हैं, रेल चलती है, मोटरें चलती हैं। पैदल यात्राकी कोअी कल्पना ही नहीं करता। पुराने जमानेमें पैदल यात्रा ही चलती थी। कोअी काशी जाता था, कोअी केदारनाथ और कोअी जगन्नाथजीकी यात्राके लिअे जाते थे। रास्तेमें सज्जनोंसे बातें होती थीं, भजन-कीर्तन होते थे। अिस तरह परमेश्वरके नामका आनन्द लेते हुअे थोड़ी देरके लिअे घरको भुलाकर यात्राके लिअे जाते थे। हृदयको शांति मिलती थी, हृदयकी शुद्धि होती थी। अिसलिअे धर्म बच गया। भगवत् दर्शनके लिअे घर छोड़कर जाते थे तो ज्ञान बढ़ता था, अीश्वर पर श्रद्धा बढ़ती थी, धर्मभावना बढ़ती थी। लेकिन यह पुराने जमानेकी बात थी। आजकल तो यात्राके लिअे भी रेलसे जाते हैं। जैसे पारसल जाती है वैसे ये जाते हैं और फेंके जाते हैं। वहां पर भगवान्‌के दर्शन तो क्या पण्डोंका दर्शन करते हैं। भगवान्‌की पूजा तो क्या पण्डोंकी पूजा करते हैं। और वापिस आ जाते हैं। अिससे कोअी खास काम नहीं होता। जिन्दगीमें सुधार नहीं होता। हृदयमें धर्मभावना नहीं जागती।

हमने देखा वैद्यनाथधाम लोग जाते थे। जय बोलते जाते थे; और मुंहमें बीड़ी रखे थे। हमने सोचा भगवान् शिव अिन्हें क्या ज्ञान देते होंगे? अिसी तरह तीर्थमें गये, नहाये-धोये, अिससे कपड़े जरूर साफ हो जायेंगे, शरीर भी शायद साफ हो जायेगा। लेकिन हृदय कैसे साफ होगा? वह तो धर्मभावना जागेगी, झूठ बोलना छोड़ेंगे तभी साफ होगा। शरीरको साबुनसे धो सकते हैं लेकिन दिलको कैसे धोयेंगे? अुसके लिअे दूसरे साबुन चाहिये।

लोग पूछते हैं आप पैदल क्यों घूमते हैं? आप १५ माहसे बिहारमें घूमते हैं; ट्रेनसे घूमते तो सारा हिन्दुस्तान घूम लेते। हम कहते हैं कि हम तो अेक पुरानी दुनियामें हैं, जब लोग ज्यादा जिन्दा रहते थे, शांतिसे रहते थे, कायदे-कानूनमें नहीं पड़ते थे, और आपसमें प्रेमसे रहते थे।

लोग पूछते हैं आप यात्रा करते हैं तो किस भगवान्‌के दर्शनके लिअे यात्रा करते हैं? हम कहते हैं कि हमारा भगवान् गोसेमें नहीं रहता। आज तो लोग समझते हैं भगवान् क्षीरसागरमें है। कोअी कहता है कि भगवान् कैलास पर्वत पर है। अैसे कैसे भगवान्? भगवान् तो घट घटमें है। हरअेकके हृदयमें है। समझो कि भगवान् समुद्रमें है, हिमालयमें है, तो हम जहां बैठे हैं, वहां पर क्या है? ये आप सारे लोग बैठे हैं, पशु-पक्षी हैं, ये सारे शैतान हैं क्या? गांवमें कोअी भूखा है तो कोअी अुसकी चिन्ता नहीं करते और बोलते हैं कि मंदिरमें भोग लगाओ। न खानेवाले भगवान्‌के सामने भोग चढ़ाते हैं और वह सारा पंडोंको खानेको मिलता है।

हमने भूदान-यज्ञका काम बताया। जगह जगह समझाते हैं। कोअी भूमिवाले होंगे और कोअी बेजमीन होंगे। बेजमीन दुःखी होंगे। कभी मजदूरी मिली तो कुछ खानेको मिला और मजदूरी नहीं मिली तो भूखे रहे। गांवमें २५ घरोंको खाने-पीनेका नहीं मिलता। यह क्या गांव है? हम समझते हैं वह श्मशान है। जैसे जंगलमें जानवर रहते हैं, अेक दूसरेकी चिन्ता नहीं करते हैं, वैसे ही ये लोग गांवमें रहते हैं। कहते हैं पड़ोसीका और हमारा नसीब अलग अलग है। हम कहते हैं अैसा सोचना गलत है। हम अेक गांवमें रहते हैं। सबको खाना मिलता है कि नहीं? सबको तालीम मिलती है कि नहीं? अिसकी चिन्ता करनी होगी। अगर बहुत ज्यादा नसीब अलग होता तो आपको अेक गांवमें पैदा क्यों करता? अेकको अमेरिकामें पैदा करता और अेकको हिन्दुस्तानमें पैदा करता। अेकको मंगल पर पैदा करता और अेकको चन्द्र पर पैदा करता। लेकिन आपको अेक गांवमें पैदा किया, अिसलिअे सबकी चिन्ता करना आवश्यक है।

हमारा कहना है कि सारी जमीन सबकी है। मालकियतकी बात गलत है। मालकियत छोड़ो। गांवका सारा अेक परिवार है। अेक परिवार समझकर गांवमें रहो तो सुखी रहोगे।

विनोबा

अेककी बजाय दो दुनिया

पिछले महायुद्धमें अमेरिकाके अेक बुद्धिमान् राजनेता श्री वेन्डेल विल्कीने कहा था कि हम 'अेक दुनिया' चाहते हैं। युद्धसे त्रस्त जगत्‌ने अुनके अिस कथनको अेक महान् संदेशके रूपमें ग्रहण किया था और अुसकी बड़ी बड़ाअी की थी। लेकिन दुर्भाग्यसे अमेरिकाकी मौजूदा विदेशनीतिका अुद्देश्य दुनियाको अेक और अखण्ड रखनेका नहीं, अुसके दो भाग करनेका है—अेक भाग अुसके शब्दोंमें 'आजाद दुनिया' का होगा, जिसमें अमेरिकाके मित्र-देशोंका समावेश होगा और दूसरेमें बाकी सब देश, जो अुसके साथ न हों और अिसलिअे जिन्हें वह अपने खिलाफ मानता है, होंगे।

प्रेसीडेन्ट आअिजनहोवरने अपने पद-ग्रहणके द्वितीय वर्षारम्भके अवसर पर अमरीकी कांग्रेसको जो संदेश भेजा है, अुसका यही निष्कर्ष निकलता है। अिस सन्देशमें मित्र-देशोंको और अधिक सैनिक तथा आर्थिक सहायता, तथा 'आजाद दुनिया' में व्यापार और वाणिज्यकी अधिक सुविधाअें देनेका वचन दिया गया है।

जाहिर है कि यह नीति अमेरिकाको आर्थिक दृष्टिसे अधिक मजबूत बनायेगी। अिसकी अुसे अर्थशास्त्रियों द्वारा घोषित आनेवाली मंदीका मुकाबला करनेके लिअे बहुत जरूरत है। अिसके सिवा मित्र-देशोंके गुटका निर्माण अमरीकी प्रजाका अुत्साह कायम रखेगा और अुत्पादन बढ़ानेके लिअे जिसकी बहुत जरूरत है अुस कम्युनिस्टोंकी विरोधी युद्ध-भावनाको भी कायम रखेगा।

www.vinoba.in

लेकिन यह स्पष्ट है कि यह नीति मानव-समाजको अेक दुनियामें संघटित करनेके बजाय अुसे आपसमें लड़नेवाले दो दलोंमें बांट देगी।

भारत दुनियाके अिन दो विरोधी गुटोंकी नजर अिसी तथ्यकी ओर खींचते रहना चाहता है और अपने अिस कर्तव्यको प्रभावशाली ढंगसे कर सकनेके लिअे ही वह अुन दोनोंसे अलग रहना चाहता है, यद्यपि वह दोनोंमें से किसीको अपना दुश्मन नहीं मानता, बल्कि दोनोंका भला चाहता है और दुनियाको अेक मानव-परिवारका रूप देनेके महान् अुद्देश्यमें अुनका दोस्त और सहायक बनकर रहना चाहता है।

क्या वे शान्तिकी अिस आवाजको सुनेंगे? हमारी अिस आशाकी सफलताका अेक मुख्य आधार यह है कि हम अपने देशके अंदर सच्चे, शान्तिमय और अहिंसक समाजका निर्माण करनेकी कोशिश करें। तभी शान्तिकी आवाज दुनियामें प्रबल और अमोघ बनेगी।

१२-१-'५४ **मगनभाई देसाई**

(अंग्रेजीसे)

विश्वशांतिका मोर्चा

[अिसमें शांति-मोर्चेकी वह घोषणा पूरी होती है, जिसका पहला भाग पिछले अंकमें दिया गया था।]

व्यवहारमें अिसका अर्थ होता है कि:

हम लोकशाही और व्यक्ति-स्वातंत्र्यके अधिकसे अधिक फैलावमें विश्वास रखते हैं।

सारी प्रजाओंके विदेशी नियंत्रणसे स्वतंत्र रहनेके अधिकारमें हमारा निश्चित रूपसे विश्वास है — भले वह नियंत्रण फौजी हो, राजनैतिक हो, आर्थिक हो या सांस्कृतिक हो। हम अुनके अैसे आन्दोलनोंका समर्थन करते हैं, जिनके जरिये वे स्वतंत्र और शांतिपूर्ण राष्ट्रोंकी स्वतंत्र दुनियाके सदस्योंकी तरह समानताका दर्जा प्राप्त करना चाहती हैं।

हम शोषण, अलगाव और भेदभावका अन्त करनेमें विश्वास करते हैं — भले वे दुनियाके किसी भी हिस्सेमें हों। हम अेक दल द्वारा दूसरे दल पर किये जानेवाले अत्याचारके आधार पर खड़े अुच्च जीवन-मान, विशेष सुविधाओं या विशिष्ट दर्जेसे अिन्कार करते हैं, फिर वह अत्याचार चाहे शस्त्रबलसे किया जाय या आर्थिक शोषणके अधिक सूक्ष्म साधनों द्वारा किया जाय।

हम यह मानते हैं कि आजकी आर्थिक समस्या विश्वव्यापी है और अुसके हलके लिअे विश्वव्यापी दृष्टिसे प्रयत्न किया जाना चाहिये। कोअी भी हल अैसा होना चाहिये, जो दुनियाके सारे राष्ट्रोंको समान दर्जे, समान अवसर और व्यक्तिगत प्रतिष्ठाकी गारंटी दे सके।

हमारा यह विश्वास है कि सामन्तशाही, जमींदारी-प्रथा, साम्राज्यवाद और खानगी कंपनियों द्वारा बुनियादी अुद्योगोंमें अुत्पादनके साधनों और सामग्रीके नियंत्रणका खात्मा होना चाहिये।

हमारा यह विश्वास है कि कुदरती और अुत्पादक साधन-संपत्ति तथा वितरण और यातायातके प्रमुख साधनों पर सबका अधिकार है; अुन पर समाजकी मालिकी होनी चाहिये और अुनकी व्यवस्था लोकशाहीके सिद्धान्तोंके अनुसार लोगोंकी अपनी सहकारी मंडलियों, संघों वगैरा द्वारा होनी चाहिये।

हमारा यह मानना है कि यंत्र-विज्ञानको मनुष्य-जातिका सेवक होना चाहिये न कि स्वामी। यंत्र-विज्ञान संबंधी कार्यक्षमताका अपने आपमें मूर्खतापूर्ण समर्थन तथा नौकरशाही और राज्यवादको, जिनका अिस नीतिके साथ चोली-दामनका संबंध है, जन्म देनेवाली सत्ताका केन्द्रीकरण लोकशाहीमें हमारी श्रद्धाको आघात पहुंचाते हैं और स्वयंशासित समाजकी हर संभावनाका नाश करनेवाले हैं।

हमारा यह विश्वास है कि हिंसा द्वारा बुनियादी सामाजिक परिवर्तन सिद्ध करनेका प्रयत्न कभी सफल नहीं होगा; केवल अहिंसाके जरिये ही लोकतांत्रिक और पूर्ण विकसित समाजकी स्थापना हो सकती है।

अगर स्वतंत्रताकी रक्षा करना है और अुसे समृद्ध बनाना है, तो यह तभी संभव होगा जब हर जगह लोग खड़े होकर अत्याचार और अन्यायका विरोध करनेको कटिबद्ध हों। और अपने अिस प्रयत्नमें वे तभी सफल हो सकेंगे, जब वे अिस संघर्षके विश्व-व्यापी स्वरूपको पहचानेंगे और अहिंसा-धर्मका पालन करेंगे। क्योंकि हिंसामें राज्य द्वारा किसी ध्येयकी सिद्धिके लिअे स्वयं मनुष्यका साधनके रूपमें अुपयोग करनेकी बात आती है।

हमारे अपने देशमें और अन्य देशोंमें लोकशाहीकी रक्षा और विस्तार हमारी अुस योग्यता पर निर्भर करता है, जो हम तीसरे कैम्पकी कल्पनाके प्रति सच्ची वफादारी दिखानेवाले आन्तरराष्ट्रीय अहिंसक क्रान्तिकारी आन्दोलनको जन्म देनेके प्रयत्नोंमें शामिल होकर दिखायेंगे। अैसे आन्दोलनको जरूरी तौर पर विभिन्न देशोंकी मौजूदा परिस्थितियों और संभावनाओंका खयाल करना होगा। यह आन्दोलन कभी धीमी गतिसे आगे बढ़ेगा, कभी तेज गतिसे। जहां संभव हो वहां वह मामूली लोकतांत्रिक साधनोंका अुपयोग कर सकता है, या अहिंसक सत्याग्रहका आश्रय ले सकता है।

विवाद आधुनिक संगठित हिंसा और जागृत सहकारी नियंत्रणके बीच है। युद्ध और शोषणका विरोध करनेवाला सविनय कानून-भंग या दूसरी पद्धतियों जैसा नकारात्मक कार्य और 'रचनात्मक कार्यक्रम' का विकास और अमल करनेवाला विधायक कार्य अेक ही झण्डेके दो पहलू हैं, जिसे अब दुनियाके आजाद राष्ट्रोंको अुठाना चाहिये।

(अंग्रेजीसे)

सही नीतिकी आधारशिला — सत्याचरण

[ता० २३-११-'५३को पूर्णिया जिलेके धमदाहा पड़ाव पर प्रजा-समाजवादी कार्यकर्ताओंके बीच किये गये प्रवचनसे।]

कार्यकर्ताओंका निवेदन

पूर्णिया जिलेमें जो बेदखलियां चल रही हैं अुनकी जानकारी देते हुअे प्रजा-समाजवादी कार्यकर्ताओंने विनोबाजीसे कहा — तेलंगानामें जिस तरह कम्युनिस्टोंने जमीन छीननेके लिअे अस्त्र-शस्त्रका प्रयोग किया था, अुसी तरह यहां श्रीमान लोग अपनी जमीन बचानेके लिअे ट्रेक्टरका अुपयोग करते हैं। अिस सिलसिलेमें कहीं खून-खराबी भी की है और अिस काममें सरकारकी सहायता भी अुन्हें मिल रही है। अिसलिअे हमने यहां सत्याग्रह शुरू किया है। और अिसी कारण हम पर यह आक्षेप किया जाता है कि हम भूदान-यज्ञमें काम नहीं करते हैं। पर हम मानते हैं कि आपने भूदानका अेक छोर पकड़ा है। जो नये भूमिहीन पैदा होते जा रहे हैं, अुसे रोकनेकी कोशिश करके हमने भूदानका दूसरा छोर पकड़ा है। हम चाहते हैं कि आपने जैसे हिन्दुस्तानका मार्गदर्शन किया है अुसी तरह हमारा भी मार्गदर्शन करें।

विनोबाजीका अुत्तर

आज आपने अभी जो निवेदन किया अिसकी कुछ जानकारी मुझे पहलेसे है, यानी पूर्णियामें आने पर ही यह जानकारी हासिल हुअी है यह बात नहीं है। बिहारमें मैं चौदह महीनेसे घूम रहा हूं। अिधरकी कअी कहानियां पहले मैं सुन चुका हूं।

समझनेकी बात है कि जो सरकार गरीबोंका भला चाहती है वही टिक सकती है। अिन दिनों जबकि वोटका हक दिया और लोकसत्ता मान ली तब गरीबोंको सतत सताते रहेंगे, यह बात होनेवाली नहीं है। अिसलिअे समझ ही लेना है कि सरकार गरीबोंके साथ है, और अगर नहीं है तो वह सत्ता खोयेगी। सरकार सत्ता खोना नहीं चाहती, अिसलिअे वह गरीबोंके साथ है, यह हमें मानना चाहिये।

www.vinoba.in

दूसरी बात जब तक कानून नहीं बदला है, तब तक जमीनवाले लोग स्वार्थ भावनासे अपना सारा संग्रह बचानेकी कोशिश करेंगे और अुन्हें सरकारसे सहायता मिलेगी। मैंने ये दो बातें परस्पर विरोधी आपके सामने रखी हैं। अेक तो लोकशाहीमें सरकार गरीबका भला चाहेगी और दूसरी, जब तक कानून नहीं बदला है तब तक जमीनवालोंको मदद करेगी। अिसमें कोअी दम्भ नहीं है, बल्कि पुराना ढांचा रखते हुअे अेक-अेक कदम आगे बढ़नेकी कोशिश करना सरकारका रुख होता है।

द्विविध नीति

हमने यह अिसलिअे समझाया कि राज्यकर्त्ता जमात अेक तरफसे दबाती भी जाती है और दूसरी तरफसे हक देनेकी मानसिक तैयारी भी करती जाती है। पर हमें यह नहीं समझना चाहिये कि गरीबोंके पक्षमें सरकार नहीं है। आज मेरी अिज्जत बहुत है, अैसा मानते हैं। पर अगर मैं हाथमें कुदाली अुठा लूं और किसी जमींदारकी जमीन पर जाकर जमीन तोड़ने लगूं और कहूं कि यह आपकी जमीन नहीं है मैं अिसे तोड़ूंगा, तो सरकार मुझे कैद कर लेगी। क्योंकि कानून ही वैसा है।

पर वे समझेंगे कि जब अैसे लोग यह काम कर रहे हैं, तो वह होने ही वाला है और मुझे जेलमें डालेंगे तो यह बात नहीं कि मेरे लिअे अुनके मनमें अिज्जत नहीं है। वे जेलमें डालेंगे तो हमारे हाथमें कारोबार आने ही वाला है। जेलमें जानेवालेको कारोबार मिलता ही है।

पार्टीबाजीका अन्त हो

यह सारी कशमकश लोकशाहीमें चलती ही है। विरोधी पार्टी होती है। अुसके बिना राज्य चलेगा ही नहीं, अैसा मानते हैं। अपोजीशन पार्टीकी तरफसे कोअी बात अुठायी जाती है तो अुसे गलत भी मानते हैं। मैं तो अिस नतीजे पर आया हूं कि पार्टी-बाजीसे मुक्त होना ही चाहिये।

पार्टियोंमें कुछ न कुछ सज्जन हैं ही। दूसरी पार्टियोंको छोड़ दें तो भी कांग्रेस और प्रजा-समाजवादी पार्टीमें कुछ सज्जन तो हैं ही, यह मानना होगा। हम तो मानते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी और जनसंघमें भी सज्जन हैं, पर अुनके विचार हमसे अुलटे हैं। अिसलिअे अुन्हें तो हम अभी छोड़ देते हैं। पर कांग्रेस और समाजवादी पार्टीमें सज्जन हैं, तो अैसा तो कोअी कार्यक्रम हो जिस पर दोनों अेक साथ चलें। अगर हमें कोअी कहे कि दो सज्जन तो हैं पर कोअी अैसी विचारकी भूमिका नहीं है जहां दोनोंके विचार अेक होते हैं, तो हम कहेंगे कि वे सज्जन नहीं हैं, दुर्जन हैं।

हिन्दुस्तानमें यह ढूंढ़ना चाहिये कि अैसा कौनसा काम है, जिस पर सज्जनोंकी अेक राय हो। अैसे काम पर लगना चाहिये, और अुसको फतह कर लेना चाहिये। अिसलिअे हमने भूदान-यज्ञ शुरू किया है। अुसमें हम क्या नहीं कहते? समाजवादी जो कहते हैं वह सब हम कहते हैं, जैसे हवा, पानी, सूर्यकी रोशनी है वैसे ही जमीन है। और यहां तक कहते हैं कि बड़े-बड़े अुद्योगोंका राष्ट्रीयकरण होना चाहिये, और छोटे-छोटे अुद्योग गांवोंमें चलने चाहिये। क्या क्या हम नहीं बताते? प्रजा-समाजवादी जो बताते हैं अुससे कहीं ज्यादा हम बताते हैं, क्योंकि हम अेक शुद्ध विचार-प्रचार करते हैं।

लोभ और भयसे घबराहट

पूर्णियामें जो जमीनवाले लोग घबराये हुअे हैं वे भूदानके कारण या दुष्टताके कारण घबराये हैं, अैसी बात नहीं; वे लोभ और भयके कारण घबराये हैं। लोभ तो सर्वत्र है, पर भय यहां पर है क्योंकि यहां पर सर्वे हो रहा है। सरकार जानकारी हासिल करना चाहती है और अुसे जानकारी देनी चाहिये। पर अिसमें यह डर है कि सरकारके पास बटाअीदारोंके नाम दर्ज हो जायेंगे तो बहुत सारी जमीन चली जायगी और हमारे पास कुछ नहीं रहेगी। अिस हालतमें वे जब कानूनके अन्दर रहकर ट्रेक्टर लाते हैं तो आपने कहा कि जैसे कम्युनिस्टोंने तेलंगानामें बन्दूक ली वैसे ही ये ट्रेक्टर ला रहे हैं। तत्त्वतः तो यह ठीक है पर कानूनके लिहाजसे यह ठीक नहीं है। ट्रेक्टर लाते हैं तो कानूनके अन्दर ही रहकर लाते हैं। अुसमें अुनकी नीयत तो यही है कि वे ट्रेक्टरसे अपनी जमीन खुद जोत सकेंगे।

सत्यको कायम रखें

मैंने सुना वह अेक प्रकारसे समाजवादियोंकी शिकायत ही मेरे पास आयी कि समाजवादी लोग बटाअीदारोंको सलाह दे रहे हैं कि ३० अेकड़वाले मालिकके जो बटाअीदार हैं, वे सरकारको न कहें कि हम अिनके बटाअीदार हैं; नहीं तो ३० अेकड़-वालोंकी जमीन चली जायगी, और हम अिनकी सहानुभूति खो देंगे तथा जमींदारों और बड़े-बड़े काश्तकारोंको अिनकी सहानुभूति मिलेगी। हम समझते हैं कि यह बिलकुल गलत पालिसी है। लोगोंको सत्य छिपानेके लिअे कहना गलत है। आपकी यह कोशिश सत्यको छिपानेकी हो रही है। सत्यको प्रगट करना चाहिये। सत्यको प्रकट करनेसे लड़नेमें और मदद मिलती है। मैं समझता हूं कि यह प्रजा-समाजवादियोंकी नैतिक भूल हो रही है। यह आपके हितमें नहीं है, और गरीबोंके हितमें भी नहीं है। मैंने तो यह भी सुना कि कुछ लोग बहका भी रहे हैं कि बटाअीदार जो जमीन नहीं जोतते थे अुसका भी दावा करें कि हम यह जमीन जोतते थे। यानी सब तरहसे झूठ ही झूठ हो रहा है। अमीर कहें कि हमने अिन्हें जमीन नहीं दी, जो नहीं जोतते थे वे कहें कि हम जोतते थे, और आप भी कहें कि ३० अेकड़वालोंके बटाअीदार अपने नाम न लिखायें — जहां सब तरहसे झूठ ही झूठ होता है वहां सत्याग्रह हो ही नहीं सकता। सत्याग्रहीके नाते जो लोग शक्ति निर्माण करना चाहते हैं, वे सत्यको कायम रखें, यह बहुत जरूरी है।

प्रजा-समाजवादी पार्टीमें अेक बड़ा नुक्स है। वे अिस तरहकी कोअी चीज करते हैं तो अुसका अखिल भारतीय सतह पर विचार नहीं कर लेते। अेकने तो हमको यहां तक कहा कि हमने सत्या-ग्रहका विकेन्द्रीकरण कर दिया है। मेरा मानना है कि यह विचार गलत है।

अच्छे अुद्देश्यके लिअे सत्य छिपानेमें अुज्र नहीं है, तो अच्छे अुद्देश्यके लिअे हिंसा करनेमें भी अुज्र नहीं होना चाहिये। अगर अुज्र है तो या तो ढोंगी हैं या मूर्ख हैं।

कम्युनिस्टोंकी तो प्रतिष्ठा है ही नहीं अतः अुनके पास खोनेकी कोअी चीज ही नहीं है। अब प्रतिष्ठाका सवाल किनके लिअे आया? आप जैसे राजनैतिकोंके लिअे और जमींदारोंके लिअे। जमींदार तो अैसे हैं कि झूठ बोलनेमें कोअी अुज्र नहीं मानते। और आजकल तो वकील भी सिखाते हैं कि अगर केस जीतना है तो अैसा-अैसा बोलो। अुस शख्ससे वे बुलवा लेते हैं कि वहां कैसे बोलना है। अगर वह कुछ गलत बोलता है, तो फौरन अुसको कहते हैं कि अैसे नहीं अैसे बोलो। अिस तरह झूठकी व्यवस्थित तालीम दी जा रही है। तो अिस विषयमें अुनकी तो अिज्जत है ही नहीं। अब आपकी कुछ है, और अगर आप भी असत्य बोलकर अिज्जत खोयेंगे तो बड़ा ही भयंकर हो जायेगा।

सत्याग्रहकी अगर ताकत बनानी है, तो हमें सत्यनिष्ठ बनना होगा। पर हम सत्यनिष्ठ नहीं होते। और यहांका जो मसला बिगड़ा है अुसमें आपका जो रवैया है वह भी अेक बड़ा कारण है। शास्त्रने कहा है, जो वाणीकी चोरी करता है वह सारी चोरियां अेक साथ कर लेता है। आप जहां सरकारको ही ठगनेकी बात करते हैं, वहां आप सरकार नहीं बन सकते।

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२३ जनवरी १९५४

कांग्रेस और गांधीजीका कार्यक्रम

कलकत्तेसे श्री जे० अेम० गांगुलीने 'कांग्रेसके आदर्श और कांग्रेसका काम' के बारेमें अपने विचार मुझे लिख भेजे हैं, जिसमें से मैं नीचेके भाग यहां देता हूं:

"अिस माहमें फिर कांग्रेसका वार्षिक अधिवेशन होने जा रहा है। अिस मौके पर स्वभावतः हमारा मन गांधीजीके आदर्शोंकी तरफ मुड़ता है, जिन्होंने अेक समय कांग्रेसके गौरव और कीर्तिको बढ़ाया था। लेकिन आज कांग्रेसके राजमें देशमें चारों तरफ चल रही बातोंको हम देखते हैं, तो लगता है कि अिन बातोंका गांधीजीके आदर्शोंसे कितना भारी विरोध है।

"आज चारों तरफसे अिसी प्रश्नकी गूंज अुठ रही है कि 'गांधीजीका कार्यक्रम कहां चला गया', लेकिन अिसका कोअी अुत्तर नहीं मिलता। अगर जनता द्वारा सरकार पर लगाये गये लापरवाही और भ्रष्टाचारके आरोपोंकी तफसीलवार सूची तैयार की जाय तो वह बहुत लम्बी हो जायगी। लेकिन अुनमें से कुछका जिक्र यहां किया जा सकता है:

(क) शासनतंत्र सादा बननेके बजाय अूपरके अधिकारियों और अन्य कर्मचारियोंकी अधिकताके कारण अितना बोझिल हो रहा है कि देश अुसका बोझ सह नहीं सकता। अुसमें राज्यमंत्रियों, अुपमंत्रियों और शायद दूसरे अनेक नामधारी मंत्रियोंकी अितनी भरमार है कि हममें से बहुतसे लोग अुनकी संख्या भी नहीं जानते, अुनके कर्तव्यों और कार्योंके विषयमें जानना तो दूरकी बात है। जिस किसीसे सरकारके खिलाफ कुछ गड़बड़ मचानेकी आशंका होती है और जो भी कुछ मतदाताओं पर अपना प्रभाव डाल सकता है, अुसे सरकारमें कोअी न कोअी पद देकर जीत लिया जाता है।

(ख) अदालतोंके जरिये मिलनेवाले न्यायकी व्यवस्था कुछ अैसी है कि गरीब, सादे और न्यायपरायण लोगोंको मुश्किलसे न्याय मिल पाता है।

(ग) खानेकी चीजोंमें मिलावट करनेकी बुराअी शायद बढ़ रही है। वनस्पतिके अुत्पादकोंके प्रभावमें आकर सरकारने वनस्पति घीको रंग देनेके आन्दोलनकी, ताकि शुद्ध घीमें वनस्पतिकी मिलावट करना असंभव हो जाय, बिलकुल अुपेक्षा कर दी। अैसे और अिसी तरहके दूसरे कारणोंसे खानेकी अन्य चीजोंमें मिलावट करनेकी बुराअी सफलतापूर्वक मिटाअी नहीं जा सकी है।

(घ) रेलके तीसरे दर्जेके मुसाफिरोंकी स्थिति पहले जैसी ही करुण आज भी है। गांधीजीका यह सिद्धान्त आज अधिकारियोंको अपील नहीं करता कि अधिकारी अपनेको जनताके सेवक मानें, न कि अुसके मालिक।

(ङ) न केवल शराबबंदीके बारेमें, बल्कि जनताकी नैतिकता पर असर डालनेवाली तमाम बातोंके बारेमें सरकारकी दृष्टि अगर परोक्ष आश्रय देनेकी नहीं तो कठोर अुदासीनताकी अवश्य रहती है। सिनेमा-अुद्योग पैसा कमानेके लिअे बेरोक-टोक किसी भी हद तक जा सकता है। सड़कोंके किनारे लगाये जानेवाले सिनेमाके विज्ञापन और चित्र बहुत ही भद्दे, अश्लील और लोगोंकी नैतिकताको भारी धक्का पहुंचानेवाले होते हैं। कमसे कम छोटे लड़कों और लड़कियोंकी तो अैसे बुरे प्रभावोंसे जरूर थोड़ी-बहुत रक्षा करना ही चाहिये। देशके हर शहरमें पाये जानेवाले 'स्वास्थ्यके लिअे बीड़ी-सिगरेट पीओ' वाले विज्ञापनोंकी सरकारको रत्तीभर चिन्ता नहीं है, हालांकि वे स्कूलोंमें पढ़नेवाले लड़के-लड़कियोंमें भी अिस भयंकर व्यसनको फैला रहे हैं।"

स्वभावतः अूपर दी गअी बातें श्री गांगुलीने अपने प्रान्तमें खासकर जो कुछ देखा अुसका परिणाम हो सकती हैं। बम्बअीके अेक पाठक भी हमेशा मेरा ध्यान वहांकी सरकारकी गलतियों और दोषोंकी तरफ खींचते रहते हैं, यद्यपि वे अिससे भिन्न प्रकारके हैं। ये सब बातें यह सूचित करती हैं कि कांग्रेसको अपने भीतरके दोष दूर करनेमें अब गंभीरतासे लग जाना चाहिये। अुसकी जिम्मेदारी ज्यादा बड़ी है, क्योंकि पंडित नेहरूके कहे अनुसार देशकी अनेक राजनैतिक पार्टियोंमें कांग्रेस ही अेकमात्र अैसी पार्टी है, जो आजकी हालतोंमें भारतमें कुछ करके दिखा सकती है। क्या कांग्रेसजन अवसरके अनुरूप शक्ति अपनेमें बढ़ायेंगे और अितिहासने जो कार्य अुन्हें सौंपा है अुसे पूरा करेंगे?

१२-१-'५४ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

अेंग्लो-अिन्डियन सम्प्रदायवाद

भारतके संविधानमें अेंग्लो-अिंडियन समुदायके साथ धारा-सभाओंमें अुनके प्रतिनिधित्वकी, कुछ खास नौकरियोंमें अुनके लिअे निश्चित जगहोंकी, और अुनकी शिक्षा-संस्थाओंके लिअे मददकी व्यवस्था करके विशेष अुदारता दिखाअी गअी है। विगत ब्रिटिश शासनके चलते हुअे अिस वर्गको कुछ विशेष अधिकार प्राप्त थे; संविधानमें अुन्हें जो सुविधायें दी गअी हैं, वे अुसी परिस्थितिका परिणाम हैं। लेकिन साथ ही संविधानमें यह स्पष्ट कर दिया गया है कि ये सुविधायें संविधानके आरम्भसे दस वर्षकी अवधि तकके ही लिये हैं और अुक्त अवधिके समाप्त होते ही वे भी खतम हो जायंगी।

जैसा कि हम जानते हैं, संविधानमें कुछ और वर्गोंको भी अैसी सुविधायें दी गअी हैं; अुदाहरणके लिअे, परिगणित, अस्पृश्य तथा पहाड़ी और जंगली जातियोंको। वस्तुतः संविधानके सोलहवें भागमें अिसी विषयका निरूपण हुआ है। हमारे संविधानका अेक बुनियादी सिद्धान्त यह है कि राज्य किसी नागरिकके खिलाफ धर्म, या जात-पांत आदिके आधार पर भेदका बरताव नहीं करेगा। लेकिन अिस सिद्धान्तके बावजूद संविधानने, ब्रिटिश शासकोंने अिन वर्गोंके जो विशेष अधिकार स्वीकार किये थे, अुनका समाधान करनेके खयालसे, अुन्हें अुपर्युक्त रियायतें देना तय किया। जाहिर है कि ये सुविधायें अपवादरूप हैं और स्थायी नहीं हो सकतीं, और जैसा कि अूपर कहा गया है वे दस वर्षके ही लिअे हैं।

अितना ही नहीं, हम तो यह अपेक्षा भी रखेंगे कि जिन वर्गों और समुदायोंको ये सुविधायें प्राप्त हुअी हैं, वे अिस विषयमें क्रमशः सही मनोवृत्ति अपनावें और अिसके लिअे अुन्हें कृपापूर्वक जो समय दिया गया है, अुसके अन्दर शेष समाजके साथ अपना मेल साध लें। दुर्भाग्यवश अैसा मालूम होता है कि अिन वर्गोंके मनमें अुक्त सुविधाओंको ज्यादा दिन तक लम्बानेकी अिच्छाका निर्माण हो रहा है और मुझे भय है कि अेंग्लो-अिंडियन समुदाय यही चाहता है। यदि अैसा हो, तो हमारी बढ़ रही लोकशाहीके लिअे यह अेक खतरनाक घटना है। जो लोग अुसे बढ़ते और विकसित होते हुअे देखना चाहते हैं, अुन्हें अिसके विषयमें पहलेसे ही सावधान हो जाना चाहिये।

www.vinoba.in

अिस विषयमें अभी आखिरी चेतावनी अेंग्लो-अिंडियन वर्गके नेताकी हालकी हलचलसे मिलती है। यह भाअी आजकल बम्बअी सरकारकी शिक्षा-सम्बन्धी भाषा-नीतिके खिलाफ आन्दोलन कर रहे हैं। अंग्रेजी खतरेमें है, अिस गलत तर्कके आधार पर वे जाहिर कर रहे हैं कि अेंग्लो-अिंडियन वर्गकी शिक्षा खतरेमें है और दावा करते हैं कि यह नीति अुन्हें संविधानमें दिये गये संरक्षणके खिलाफ जाती है। अितना ही नहीं, वे बम्बअी राज्यकी अंग्रेजी माध्यमसे पढ़ानेवाली शालाओंको अिस नीतिसे सम्बन्धित सरकारी आदेशोंको अमान्य करने और अुनका अुल्लंघन करनेके लिअे भी कह रहे हैं। अिस तरह अुन्होंने लगभग सत्याग्रहकी, यानी सविनय आज्ञाभंगकी पुकार लगायी है। थोड़ी देरके लिअे अिस आन्दोलनके गुण-दोषोंका खयाल न करें, तो यह देखकर काफी कुतूहल मालूम होता है कि सत्याग्रहका विचार अब वे लोग भी स्वीकार कर रहे हैं, जो अभी कुछ ही वर्ष पहले अुसके सख्त विरोधी थे।

अब अिस आन्दोलनके औचित्यकी परीक्षा की जाय। जाहिर है कि आन्दोलन बम्बअीमें जिस तरह चलाया जा रहा है अुसके लिअे कोअी अुचित कारण नहीं है। जैसा कि राज्यके शिक्षा-मंत्रीने हाल ही में स्पष्ट किया है, राज्यकी भाषा-नीति कोअी नयी चीज बिलकुल नहीं है। वह आजसे कअी वर्ष पहले सन् १९४८ में अपनायी गयी थी और अंग्रेजी माध्यमसे पढ़ानेवाली सभी शालाओंको तभी अुसकी सूचना कर दी गयी थी। सन् १९५१में अुसे दुबारा स्पष्ट किया गया था और अिन स्कूलोंको स्पष्ट हिदायतें दी गयी थीं कि वे किन विद्यार्थियोंको प्रवेश दें। लेकिन अिन हिदायतोंकी कोअी परवाह नहीं की गयी और अुस विषयमें अेक अविनयपूर्ण और गुप्त प्रकारकी अवज्ञा आज तक चलती आयी है। जैसा कि शिक्षामंत्रीने कहा है, अुसमें काफी बेअीमानी चली और जो सुविधाअें अुन हिदायतोंके अनुसार अिन स्कूलोंको दी गयी थीं, अुनका दुरुपयोग हुआ। अब जो किया गया है, वह यह है कि अिस बातकी स्पष्ट घोषणा कर दी गयी है कि अिस नीति पर सख्तीसे अमल किया जायगा; स्कूलोंको सूचना कर दी गअी है कि वे अपने यहां जिनकी भाषा अंग्रेजी है यानी अेंग्लो-अिंडियन और गैर-अेशियाअी नस्लके बालकोंके सिवाय दूसरे विद्यार्थियोंको प्रवेश न दें।

अिस नीतिके पीछे कोअी साम्प्रदायिक या जातीय भेद-भावकी प्रेरणा नहीं है, जैसा कि अुसके कुछ विरोधी व्यर्थ ही सिद्ध करनेकी कोशिश करते हैं। वह अिस सही और बुनियादी और आजकल लगभग सर्वमान्य शैक्षणिक सिद्धान्त पर आधार रखती है कि भारतमें सारी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाका माध्यम विद्यार्थियोंकी प्रादेशिक भाषा ही होना चाहिये। माध्यमिक शिक्षा-समितिने भी अिस सिद्धान्तको अखिल भारतीय नीतिके तौर पर स्वीकार कर लिया है।

अिस सिलसिलेमें यह भी याद रखना चाहिये कि संविधानमें अंग्रेजीको मान्य भारतीय भाषाओंमें स्थान नहीं दिया गया है। लेकिन सरकार द्वारा अुल्लिखित, अेंग्लो-अिंडियन और गैर-अेशियायी नस्लवाले हमारी जनताके कुछ वर्ग अैसे हैं जो कहते हैं कि अंग्रेजी अुनकी मातृभाषा है। बम्बअी सरकारकी शिक्षानीति अुन्हें अधिकार देती है कि वे अपने बच्चोंका शिक्षण अंग्रेजीके जरिये करते रहें। अिसलिअे यह कहना कि अेंग्लो-अिंडियन लोगोंकी शिक्षा खतरेमें पड़ गयी है बिलकुल भ्रामक है। हमारे दुर्भाग्यसे यह जरूर सच है कि संक्रमणकी अिस अवस्थामें, जिसमें हम आज रह रहे हैं, बम्बअी शहरमें कुछ अैसे मां-बाप हैं जो अंग्रेजी तालीमके अुसी पुराने युगमें रहना चाहते हैं, जबकि अध्ययनके विषयोंमें अंग्रेजीका स्थान सर्वोच्च माना जाता था, बल्कि वही अेकमात्र अध्ययनके लायक विषय माना जाता था। संविधान कहता है कि अंग्रेजीकी अब वह प्रभुता नहीं रहेगी, भारतीय भाषाओंका पूरा विकास किया जायगा और हम जिस नवीन भारतका निर्माण कर रहे हैं, अुसमें अुन्हें अुनका योग्य स्थान और सम्मान दिया जायगा।

बम्बअी राज्य हमारे संघकी अिसी बुनियादी नीतिका अमल कर रहा है। सवाल यह है कि जो लोग अिसके खिलाफ आन्दोलन कर रहे हैं वे पुरानी स्थिति कायम रखना चाहते हैं या देशके प्रगतिशील तत्त्वोंके साथ आगे बढ़ना चाहते हैं? अंग्रेजीको कायम रखनेमें ही अपना स्वार्थ देखनेवाले अिन लोगोंको, जोकि पुरानी अंग्रेजी तालीमकी अुपज हैं, अपनेको हमारे लोकतंत्रकी आवश्यकताओंके अनुसार बदलनेके लिअे तैयार होना चाहिये। अुन्हें अुसकी प्रगतिमें बाधक तो हरगिज नहीं होना चाहिये।

अिसलिअे मैं बहुत विनम्रतापूर्वक कहता हूं कि अुक्त अेंग्लो-अिंडियन नेताको अपने समाजके हितार्थ ही संकुचित साम्प्रदायिक भावनासे प्रेरित अिस आन्दोलनसे हट जाना चाहिये, और बम्बअीके शिक्षा-मंत्रीने अुन्हें अिस विषयमें जो आश्वासन दिये हैं अुनसे संतोष मानना चाहिये। अुन्हें यह भी देखना चाहिये कि अुपर्युक्त सरकारी आदेश सिर्फ अेंग्लो-अिंडियन स्कूलोंके लिअे नहीं, अंग्रेजी माध्यमसे पढ़ानेवाले राज्यके तमाम स्कूलोंके लिअे लागू है।

अिसके सिवा, यह कहकर कि यह नीति अंग्रेजी भाषाके खिलाफ है और अुसका शिक्षण बन्द कर दिया जायगा, लोगोंके मनमें अेक निरर्थक भ्रम पैदा किया जा रहा है। यह बात बिलकुल झूठ है और जो लोग अैसा कर रहे हैं, अुनके लिअे शोभाप्रद नहीं है। अुससे तो सिर्फ यही प्रगट होता है कि वे गलत केसको अिस तरहके झूठे प्रचारके जरिये बल पहुंचानेकी कोशिश कर रहे हैं। जैसा कि हम जानते हैं, अंग्रेजी आठवीं कक्षासे पढ़ाअी जायगी। माध्यमिक शिक्षा अिसी कक्षासे आरम्भ होती है। हमारी युनिवर्सिटियोंमें भी लगभग पहलेकी ही तरह वह अध्ययनका अेक विषय रहेगी। दुनियाकी अेक महत्त्वपूर्ण भाषाकी तरह अुसे सीखनेका विरोध कोअी नहीं करता। सवाल अुसे अुसके पुरानी प्रभुताके आसन से हटाकर अपनी राष्ट्रीय शिक्षा-योजनामें योग्य स्थान पर रखनेका है।

स्वतंत्र भारत अपनी शिक्षापद्धतिकी पुनर्रचना करेगा, तो मौजूदा पद्धतिमें अनुकूल परिवर्तन करने ही पड़ेंगे। संविधानकी दुहाअी देकर 'अपने समाजकी शिक्षा खतरेमें है?' अैसी पुकार मचाना अिन अनिवार्य परिवर्तनोंके खिलाफ अपना रोष प्रगट करनेका अुचित या योग्य तरीका नहीं है। अिस विषयमें बम्बअी सरकारका यह साहसपूर्ण नेतृत्व बहुत सराहनीय है, और हम आशा करते हैं कि दूसरे राज्य भी अुसके अिस अुदाहरणका अनुकरण करेंगे, ताकि गांधीजीकी कल्पनाकी बुनियादी शिक्षाके जरिये हमारी शिक्षामें लम्बे वक्तसे जिस क्रांतिकी आवश्यकता महसूस हो रही है, वह शुरू हो जाय और बढ़ने लगे।

११-१-'५४ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण

गांधीजी

संपादक: भारतन् कुमारप्पा

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-५-०

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

समयकी पाबन्दी और व्यवस्था

अगर नेता और कार्यकर्ता अपने समयका सख्तीसे पालन करें, तो हमारे राष्ट्रीय ध्येयको अिससे निश्चित और स्पष्ट लाभ होगा। किसी भी आदमीसे शक्तिसे बाहर काम करनेकी अपेक्षा नहीं रखी जाती। अगर दिनके अन्तमें काम करनेको बच रहता है या कोअी नींद अथवा मनबहलावके समय पर आक्रमण किये बिना अपना काम पूरा नहीं कर पाता, तो मानना चाहिये कि कहीं न कहीं गड़बड़ या अव्यवस्था है। अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं कि समय-पालनकी और कार्यक्रमके अनुसार काम करनेकी आदत हम डाल लें, तो राष्ट्रीय कार्यक्षमताका स्तर अूंचा अुठेगा, हमारे ध्येयकी ओर हमारी प्रगति तेज होगी और हमारे कार्यकर्ता ज्यादा स्वस्थ, सबल और दीर्घायु होंगे।

हरिजन, २४-९-'३८ **मो० क० गांधी**

सफलता अनिवार्य है

[ता० १९-१२-'५३ को सुपौल पड़ावमें दिये हुअे प्रार्थना-प्रवचनसे।]

'भारत छोड़ो' का अेक मंत्र गांधीजीने हमें दिया था, जिसका नतीजा यह हुआ कि हजारों लोग कट गये, कुछ मारे गये, कुछ जेलमें ठूंसे गये और वहां बरसों तक पड़े रहे। जेलमें हमारी चर्चा चलती थी कि हमने 'भारत छोड़ो' मंत्र तो दिया, लेकिन जीत तो अंग्रेजोंकी ही होती दीखती है। मैं साथियोंसे कहता रहता था कि जब दीपक बुझनेकी तैयारीमें होता है, तब अेक दफा जोरसे बढ़ जाता है और बादमें बुझ जाता है। ये अंग्रेज अितना जोर दिखा रहे हैं यह अिनका आखिरी जोर है। और जब 'भारत छोड़ो' मंत्रका जप बच्चे-बच्चेने किया है, तो अंग्रेजोंको भारत छोड़ना ही होगा। मैंने जेलमें ही कह दिया था और हुआ भी अैसा ही। हमने देखा १९४२ में अुस मंत्रका अुदय हुआ और पांच सालके बाद अंग्रेज गये। जिस मंत्रका अुच्चारण बच्चा-बच्चा करता है और हजारों-लाखों लोग जिसका जप करते हैं, जिसकी तमन्ना रखते हैं, वह सिद्ध होकर ही रहता है। आज पूरे बिहारमें आवाज गूंज रही है कि बेजमीनोंको जमीन दो और जमीनका छठा हिस्सा दो। बच्चा-बच्चा बोल रहा है और गांवके अपढ़ लोग भी बोल रहे हैं, तो यह महान संकल्प कहां जायेगा? आत्माका संकल्प व्यर्थ नहीं जाता। समाजकी आत्मा जहां जाग जाती है, वहां अुसके प्रवाहको नहीं रोका जा सकता।

बहुत दफा लोग पूछते हैं कि आप गरीबोंको जमीन देना चाहते हैं, गरीबोंकी भलाअीके लिअे यह आन्दोलन आपने अुठाया है, तब गरीबोंसे जमीन क्यों मांगी जाती है? हम कहते हैं कि लाखोंकी तादादमें जब गरीब अपना हिस्सा देते हैं तो अुनकी आवाज बुलन्द हो जाती है, अुनकी आवाजमें ताकत आती है, अुनकी नैतिक शक्ति बढ़ती है और अुसके परिणामस्वरूप जो श्रीमान लोग हैं, बड़े जमींदार हैं, अुनका दिल पिघल जाता है। अुनके हृदयमें भी अन्तर्यामी भगवान् जाग जाते हैं। जब छोटे-छोटे लोग दान देते हैं, तब अुसका परिणाम जमींदारों पर, श्रीमानों पर होता है। अगर कोअी पूछता है तो हम कहते हैं अिससे दुहरी शक्ति पैदा होती है। गरीबोंके दानसे दुहरी ताकत बननेवाली है। अेक तो नैतिक परिणाम बड़ोंके हृदय पर होता है। अुनकी कर्तव्य-भावना जागृत होती है, अुनकी धर्मभावना जागृत होती है। अगर यह नहीं हुआ तो दूसरा परिणाम यह होता है — गांवके सब लोगोंने दान दिया तो अुनके सहयोगके बिना तो जमींदारका काम नहीं चलेगा। अिस जन-आन्दोलनसे परिस्थिति भी बदल जाती है। अिसके मानी जमींदारोंको भान होता है कि अिनके सहयोगके बिना हम जी नहीं सकेंगे। गरीबोंके दानसे न केवल करुणा जागती है, बल्कि परिस्थिति भी बदलती है और अुसके वश बड़ोंको होना पड़ता है। अेक कामसे दो बातें बनती हैं। अेक तो हृदय-परिवर्तनकी ताकत और दूसरी परिस्थितिका परिवर्तन।

लोग पूछते हैं, क्या वह हिंसासे नहीं होगा? अेक जमाना था जब छुटपुट हिंसा चलती थी और अुसका लाभ होता था। लेकिन अब जमाना आया है, जिसमें अत्यन्त बड़े पैमाने पर हिंसा की जाती है। सरकारकी ताकत जनताकी ताकत नहीं बन सकती। समाजमें बच्चे हैं, बूढ़े हैं, स्त्रियां हैं। अिनकी ताकत तलवारकी ताकत नहीं हो सकती। अगर हम हिंसासे राज्य करें तो चन्द लोगोंका राज्य होगा। यह लोकराज्य नहीं है। लोकराज्य तो तब होगा जब लोकशक्ति प्रगट होगी। और तब अगर पापका काम हो रहा हो और किसीसे कहें कि अिसमें शरीक होअिये, तो बच्चा भी कह सकता है कि हम अिसमें शरीक नहीं होंगे। चाहो तो मार सकते हो। जुल्मीके सामने हिम्मतके साथ यह कहनेकी शक्ति कि हम तुम्हारे बस नहीं होते, लोकराज्यमें होती है।

विनोबा

टिप्पणियां

गांधी-ज्ञानमंदिर

अभी अुस दिन जब प्रधानमंत्रीने वर्धामें गांधी-विचारके अध्ययन और संशोधनके केन्द्र, गांधी-ज्ञानमंदिरके भवनका अुद्घाटन किया, तब स्वर्गीय श्री जमनालालजीका अेक अभिलषित सपना पूरा हुआ। श्री जमनालालजीने अैसा अेक केन्द्र खोलनेकी अिच्छा सन् १९३७ में प्रगट की थी, और अिसमें अुन्हें गांधीजीका आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ था। दुर्भाग्यसे सन् १९४२ में ही अुनका देहान्त हो गया और अुनकी अिच्छा अपूर्ण रह गयी। हम अुनके अुत्तराधिकारियोंकी सराहना करते हैं कि अुन्होंने अुनकी अुक्त योजनाको आगे बढ़ाया और सफल बनाया। अिस भवनमें अेक गांधी-पुस्तकालय चलेगा और विद्यार्थियों तथा विद्वानोंको गांधी-विचारके अध्ययनकी सुविधायें दी जायंगी। हम आशा करते हैं कि यह संस्था शीघ्र ही अपने नामके अनुरूप गांधी-ज्ञान और गांधी-ज्ञानके अभ्यासियोंका श्रेष्ठ केन्द्र बन जायगी। अिस सदुद्देश्यमें हम अुसकी सफलताकी कामना करते हैं।

१५-१-'५४ **म० प्र०**

(अंग्रेजीसे)

सातवें दरजेमें वैकल्पिक अंग्रेजी

बम्बअी सरकारने जाहिर किया है अंग्रेजीका शिक्षण अब आगे प्राथमिक या माध्यमिक सारी स्कूलोंमें आठवें दरजेसे ही शुरू होगा। भाषा-संबंधी नीति अंग्रेजी माध्यमसे पढ़ानेवाली शिक्षा-संस्थाओंको भी लागू है, और जून १९५४ से अुसका अमल दृढ़तापूर्वक किया जायगा। अुसी तरह सातवें दरजेसे अंग्रेजीको हटानेकी नीति भी जून १९५४ से ही शुरू होनी चाहिये और स्कूलोंको सूचना दे देनी चाहिये कि अुक्त तारीखसे सातवें दरजेमें पढ़ाअी जानेवाली वैकल्पिक अंग्रेजी बन्द कर दी जाय। अगर सरकार धारासभा द्वारा निर्णीत और अपनी स्वीकृत भाषा-नीतिका निरपवाद और स्पष्ट अमल करना चाहती है, तो अैसा करना जरूरी है।

१४-१-'५४ **म० प्र०**

(अंग्रेजीसे)

अंग्रेजी द्वारा शिक्षण और राज्य

बम्बअीमें कुछ लोग अपने बुनियादी अधिकारके नाम पर यह सवाल अुठा रहे हैं कि अगर कुछ माता-पिता अपने बच्चोंको अंग्रेजीमें शिक्षा दिलवाना चाहते हैं, तो क्या सरकारको यह अधिकार है कि वह अुन्हें वैसी सुविधा न लेने दे?

www.vinoba.in

अिसका अुत्तर बिलकुल साफ है: माता-पिता अपने बच्चोंके हितमें जो ठीक समझें, वैसी अिच्छा रखनेके लिअे और वैसा करनेके लिअे स्वतंत्र हैं। लेकिन अपनी अिस अिच्छाकी पूर्तिके लिअे सरकारसे अधिकारके तौर पर सुविधायें मांगना अलग बात है। राज्य तो सिर्फ सार्वजनिक हितके काममें ही मदद दे सकता है, और वह भी सार्वजनिक हितके लिअे जिन सिद्धान्तों और नीतियोंको अुसने बुनियादी माना है, अुनके अनुसार ही। मुमकिन है कि कुछ माता-पिता सरकारकी अिन नीतियों और सिद्धान्तोंको पसन्द न करें, और अुनकी अिच्छा कुछ अलग हो। अैसी हालतमें अगर वह अिच्छा कानून और सर्वजन-सम्मत सदाचारके खिलाफ नहीं है, तो वे अुसकी तृप्तिका आनंद ले सकते हैं, लेकिन यह सार्वजनिक पैसेके बल पर नहीं।

प्रस्तुत प्रश्नको लें, तो माता-पिता सरकारसे यह आशा नहीं रख सकते कि वह अुन्हें अंग्रेजी-शिक्षणकी सुविधा देगी, अगर अैसा करना अुसकी शिक्षा-विषयक बुनियादी नीतिके खिलाफ है।

अेक दूसरे प्रकारका अुदाहरण लें तो यह दलील और स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये कुछ माता-पिता अपने बच्चोंको तथा-कथित अछूत बालकोंके साथ नहीं पढ़ाना चाहते। अैसी हालतमें राज्य निःसन्देह अुन्हें अिसके लिअे कोअी सुविधा नहीं देगा। अगर ये माता-पिता अपनी बातके लिअे बहुत अुत्सुक हैं, तो वे अिसके लिअे अपनी निजी व्यवस्था कर सकते हैं जिसे सरकार न तो सहायता देगी न मान्यता। अिसी तरह कुछ माता-पिता अपने बच्चोंको साम्प्रदायिक किस्मकी धार्मिक शिक्षा देनेकी अिच्छा रख सकते हैं। लेकिन अुन्हें यह सुविधा सरकारसे यानी सार्वजनिक स्कूलोंमें नहीं मिल सकती।

१४-१-'५४ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

अुपाधियोंकी समाप्ति

भारतके संविधानने जब अुपाधियां वितरित करनेका रिवाज खतम किया तो अधिकांश लोगोंको बड़ी खुशी हुअी थी। लेकिन हमारे दुर्भाग्यसे अुनका मोह फिर सिर अुठा रहा है। अिस समाचारको सुनकर हमें बहुत खेद हुआ कि भारत-सरकारने खास कोटि या प्रकारकी सेवाओंके लिअे अुपाधियां और पदक बांटनेका निश्चय किया है। संविधानकी धारा १८ में स्पष्ट रूपसे कहा गया है कि "सैनिक-पद या विद्वत्ता-सूचक अुपाधियोंको छोड़कर राज्य किसी तरहकी अुपाधियां नहीं देगा।" तब क्या सरकारकी यह विज्ञप्ति कि लोगोंको अुनकी विशिष्ट सेवाओंके लिअे 'भारत-रत्न' और 'पद्म-विभूषण' की अुपाधियां दी जायंगी, संविधानके खिलाफ नहीं है? अिस बातको जाने दें, तो भी यह सवाल रहता है कि जब हमने लोकतंत्रके आधार पर अपने समाजके निर्माणका निर्णय किया है, तब क्या यह अुचित है कि हम अपने बीचमें अैसे गैरजरूरी और अवांछनीय भेदोंकी सृष्टि करें? ज्यादा अच्छा यही है कि नया भारत अपनी नागरिक प्रजामें अिस तरहके अनिष्ट भेद-भाव पैदा करनेकी प्रथासे अछूता ही रहे।

१४-१-'५४ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

'अेंग्लो-अिंडियन' शिक्षण

डॉ० केसकरने ऑल अिंडिया रेडियो, दिल्लीसे 'भारतमें शिक्षाका भविष्य' नामक व्याख्यानमालाके अन्तर्गत बोलते हुअे कहा:

"वर्तमान शिक्षा-प्रणालीका अेक स्पष्ट दोष, जिसे हमें दूर करना होगा, यह है कि अुसका कोअी राष्ट्रीय स्वरूप या विशेषता नहीं है। मौजूदा अभ्यासक्रम विभिन्न देशों और स्रोतोंसे, मुख्यतः पश्चिमसे और अुसमें भी विशेष करके अिंग्लैण्ड और अमेरिकासे, लिये हुअे विषयों या अंगोंकी खिचड़ी जैसा है। सच पूछा जाय तो यह कहना ज्यादा गलत नहीं होगा कि वह ब्रिटेन और अमेरिकाकी कुछ शिक्षण-संस्थाओंकी नकलभर, और वह भी बहुत अच्छी नकल नहीं, है।"

डॉ० केसकरने आगे कहा कि हमारी मौजूदा शिक्षा-प्रणालीकी सबसे अधिक ध्यान देने लायक बात यह है कि जो भी आदमी किसी भारतीय शिक्षण-संस्थामें शिक्षा ग्रहण करता है, अुसमें बेशक न तो भारतीय संस्कृति या परम्पराकी विशेषतायें ही घर करने पाती हैं और न वह ब्रिटिश या अमेरिकन संस्कृतिको ही पूरी तरह पचा पाता है। भारतमें शिक्षा पाया हुआ विद्यार्थी ज्यादासे ज्यादा 'अेंग्लो-अिंडियन' कहा जा सकता है; यद्यपि वह अपने देशसे पूरी तरह अपरिचित नहीं रहता, फिर भी ब्रिटेन और अमेरिकाके जीवन और संस्कृतिका ही अुसे अधिक ज्ञान होता है। बड़े दुःखकी बात है कि अुसे अपने देशका बहुत ही परोक्ष और अत्यन्त अधूरा ज्ञान होता है। कोअी विदेशी विद्यार्थी, अगर वह अिसके लिअे विशेष प्रयत्न न करे तो, भारतकी शिक्षण-संस्थाओंमें बरसों बितानेके बाद भी शायद ही भारतकी भव्य परंपराओंका कुछ हिस्सा अपने भीतर पचा कर जा सकता है। हमारे देशकी शिक्षण-संस्थायें भारतके अितिहास, संस्कृति, साहित्य और समाजके बारेमें पढ़ानेके बजाय पश्चिमके अितिहास, संस्कृति वगैराके बारेमें ही ज्यादा पढ़ाती हैं।" ('हिन्दुस्तान टाअिम्स', ८-१-'५४)

(अंग्रेजीसे)

शराबबन्दी और जनकल्याणका कार्य

शराबबन्दीसे गांवोंके लोगोंको किस तरह रचनात्मक कार्य करनेकी प्रेरणा और शक्ति मिली है, अिसकी अेक मिसाल साबरकांठा जिलेमें प्रान्तिजके हरिजन भाअियोंने पेश की है। अुन्होंने गांधी-ज्ञानमंदिर नामका अेक भवन निर्माण किया है, जो हरिजनोंमें सेवा और सांस्कृतिक शिक्षाके काम करेगा।

भवनके निर्माणमें १५०००) का खर्च हुआ है, जिसमें ७०००) अुन लोगों द्वारा अिस कामके लिअे दिया गया चंदा था। और यह चंदा अुन्होंने अपनी अुस बचतमें से दिया था जो कि अुन्हें राज्यमें पूर्ण शराबबन्दी और सामाजिक तथा जातीय आयोजनों पर होनेवाले गैरजरूरी खर्चकी रोकके फलस्वरूप प्राप्त हुअी।

(अंग्रेजीसे)

भावी भारतकी अेक तसवीर

[दूसरी आवृत्ति]

किशोरलाल मशरूवाला

कीमत १-०-० डाकखर्च ०-५-०

रचनात्मक कार्यक्रम

[दूसरा संस्करण]

लेखक: **गांधीजी**

अनु० **काशिनाथ त्रिवेदी**

कीमत ०-६-० डाकखर्च ०-३-०

विवेक और साधना

लेखक: **केदारनाथ**

संपादक

किशोरलाल मशरूवाला : रमणीकलाल मोदी

कीमत ४-०-० डाकखर्च १-२-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद - ९

www.vinoba.in

अेक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव

[जलगांवमें ता० १–१–'५४ को राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेसके छठे वार्षिक अधिवेशनमें हमारे देशकी बेकारी और अर्ध-बेकारीकी गंभीर समस्या पर नीचेका प्रस्ताव पास किया गया था।

राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस देश भरमें फैले हुअे अपने मजदूर-संघोंके जरिये स्वदेशी और हाथकी बनी चीजों वगैराका मजदूरोंमें प्रचार करके अिस स्थितिको सुधारनेमें सीधी मदद कर सकती है। अीश्वरकी तरह सरकार भी अुन्हींकी मदद करेगी, जो अपनी मदद खुद करते हैं। यह बात ग्रामोद्योगोंके बारेमें विशेष रूपमें सच है, जो अभी तक हमारे शासकों और अुनके योजनाकारोंको अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर सके हैं।

हमें आशा है कि योजना-कमीशन और भारत-सरकार राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेसके अिस महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पर ध्यान देंगे।

१३–१–'५४ –म० प्र०]

१. राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस अिस बात पर अपना सन्तोष प्रकट करती है कि सरकार और जनता ग्रामीण तथा शहरी बेरोजगारीकी परिस्थितिसे परिचित है तथा बेरोजगारों और अर्ध-बेरोजगारोंको पूर्ण रोजगार देनेके प्रयत्न किये जा रहे हैं। यह जानकर सन्तोष होता है कि योजना-कमीशनने अधिक लोगोंको रोजगार देनेके विचारसे योजनामें परिवर्तन करनेकी आवश्यकताका अनुभव किया है। समस्या अितनी बड़ी है कि अगर शीघ्र ही कोअी प्रभावशाली कार्यवाही न की गअी, तो रोजगारकी स्थिति शीघ्रतासे बिगड़ते जानेकी संभावना है, जिससे देशके सामाजिक तथा आर्थिक ढांचेके लिअे खतरा अुत्पन्न होनेका भय है।

२. बेरोजगारीकी समस्याका हल देशकी आर्थिक अुन्नति पर निर्भर करता है। अतः जनताको अिस कार्यको पूरा करनेमें अपनी पूर्णशक्ति लगा देनी चाहिये। अिसलिअे यह अति आवश्यक है कि अुत्पादनके अुपाय अिस प्रकार काममें लाये जायें, जिससे जनताकी आवश्यकताओंकी पूर्ति होते हुअे देशके हर सशक्त पुरुष और स्त्रीको काम मिल सके, चाहे ग्राममें हो चाहे शहरमें हो। जहां तक बड़े पैमानेके अुद्योगोंको बढ़ानेकी बात है, हमारे प्रयत्न मूल अुद्योगोंमें केन्द्रीभूत होने चाहिये और खाद्य सम्बन्धी तथा अन्य जनोपयोगी पदार्थ ग्राम तथा गृह-अुद्योगोंके लिअे छोड़ दिये जाने चाहियें। जनताकी आवश्यकताकी अैसी वस्तुओंके अुद्योगोंको बढ़ानेकी अिजाजत नहीं देना चाहिये, और यदि बन्द करनेसे ज्यादा लोगोंको रोजगार मिलता हो तो मौजूदा कारखाने बन्द भी कर दिये जायें। अिस लक्ष्यको दृष्टिमें रखते हुअे यह आवश्यक है कि मजदूरोंको कम करनेवाली मशीनों तथा मशीन-सुधार द्वारा छटनी पर अिस प्रकार नियन्त्रण किया जाये कि अुससे कोअी बेरोजगारी अुत्पन्न न हो।

३. राष्ट्रीय मजदूर-कांग्रेसका यह निश्चित मत है कि यदि भारतकी बेरोजगारीकी समस्या हल करनी है और जनताको रोजगार देना है तो अुसे ग्राम तथा गृह-अुद्योगकी नीति अपनानी पड़ेगी तथा अिनकी पूर्ति बड़े अुद्योगोंसे, जो चालू हैं, करनी पड़ेगी। ग्रामोद्योगों तथा छोटे-छोटे अुद्योगोंकी बनी हुअी वस्तुओंकी रक्षा करनी पड़ेगी, जिससे बड़े अुद्योगोंके मुकाबलेमें वे समाप्त न हो जायें। अिस लक्ष्यकी प्राप्ति दोनों प्रकारके अुद्योगोंके अलग अलग क्षेत्र कायम करनेसे या छोटे अुद्योगोंकी वस्तुओंको आर्थिक सहायता देकर और बड़े अुद्योगोंमें पैदा हुअी वस्तुओं पर कर लगाकर दोनों प्रकारकी वस्तुओंका मूल्य अेकसा करके हो सकती है। अिसके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकारको अपनी आयात-नीतिमें परिवर्तन करने पड़ेंगे और अन्न तथा अुन वस्तुओंका आयात बिलकुल कम कर देना होगा, जो चालू या नये कारखानों द्वारा पैदा की जा सकती हैं।

४. आम जनताका समर्थन प्राप्त करनेके लिअे और देशी चीजोंकी लोगोंकी जरूरतें पूरी करनेकी कार्यक्षमतामें विश्वास बढ़ाने और मजबूत बनानेके लिअे सारे देशमें स्वदेशी मालके अुपयोगके लिअे जोरदार प्रचार करना होगा। और केन्द्रीय सरकार तथा राज्य-सरकारोंको चाहिये कि वे केवल देशमें ही बनी चीजों, और अुसमें भी यथासंभव ग्रामोद्योगों और छोटे पैमानेके अुद्योगोंमें बनी चीजोंका ही अुपयोग करके जनताके सामने अेक अुदाहरण पेश करें।

५. सारे देशमें टेकनिकल तालीम देनेवाले स्कूल बड़ी संख्यामें खोले जाने चाहिये और देशके युवक तथा युवतियोंको विभिन्न अुद्योगोंकी तालीम लेनेके लिअे काफी प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये।

६. राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेसको यह जानकर प्रसन्नता होती है कि खादी और ग्रामोद्योगोंके लिअे तथा हाथकरघा अुद्योगके लिअे बोर्ड कायम करके केन्द्रीय सरकारने ग्राम और गृहअुद्योगों तथा छोटे पैमानेके अुद्योगोंकी रक्षाके लिअे प्रारंभिक कदम अुठाया है। लेकिन देशके सामने खड़ी समस्या अितनी महान है कि अिन सीमित प्रयत्नोंके कोअी अुल्लेखनीय परिणाम नहीं आ सकेंगे। अिसलिअे अब समय आ गया है कि सरकार अिस सम्बन्धमें अपनी भावी नीति निश्चित और घोषित करे और अुसके अमलके लिअे तुरन्त जोरदार कदम अुठावे। राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस सरकारको अिस नीतिके अमलमें अपना पूरा-पूरा सहयोग देगी।

(अंग्रेजीसे)

आत्म-सहायता

मैंने अपने जीवनका यह ध्येय कभी नहीं बनाया कि जहां-जहां लोगों पर संकट आवे, वहां-वहां पहुंचकर मैं अुन्हें संकटसे मुक्त करूं और पुराने जमानेके शूर-सामन्तोंकी तरह अिसे अपना अेक पेशा ही बना लूं। मैं तो नम्रतापूर्वक लोगोंको यह बतानेकी कोशिश करता रहा हूं कि वे खुद अपनी कठिनाअियां किस तरह हल कर सकते हैं।

हरिजनसेवक, २८–६–'४२

अगर मैं मानव-परिवारको अिस बातका विश्वास करानेमें कामयाब हो सकूं कि हर पुरुष या स्त्री, फिर वह शरीरसे कितनी ही कमजोर क्यों न हो, अपने आत्म-सम्मान और स्वतंत्रताकी खुद रक्षक है, तो मैं अपना काम पूरा हुआ समझूंगा।

हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड, ६–८–'४४ **मो० क० गांधी**

विषय-सूची

		पृष्ठ
पैदल यात्रा और भूदान	विनोबा	३७७
अेककी बजाय दो दुनिया	मगनभाई देसाई	३७७
विश्वशांतिका मोर्चा		३७८
सही नीतिकी आधारशिला—सत्याचरण	विनोबा	३७८
कांग्रेस और गांधीजीका कार्यक्रम	मगनभाई देसाई	३८०
अेंग्लो-अिंडियन सम्प्रदायवाद	मगनभाई देसाई	३८०
समयकी पाबंदी और व्यवस्था	गांधीजी	३८२
सफलता अनिवार्य है	विनोबा	३८२
अेक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव		३८४
आत्म-सहायता	गांधीजी	३८४
टिप्पणियां :		
गांधी-ज्ञानमंदिर	म० प्र०	३८२
सातवें दरजेमें वैकल्पिक अंग्रेजी	म० प्र०	३८२
अंग्रेजी द्वारा शिक्षण और राज्य	म० प्र०	३८२
अुपाधियोंकी समाप्ति	म० प्र०	३८३
'अेंग्लो-अिंडियन' शिक्षण	डॉ० केसकर	३८३
शराबबंदी और जनकल्याणका कार्य		३८३

www.vinoba.in